ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

भारत में पर्यावरणीय मुद्दे
Environmental Issues in India

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 23/03/2021, Date of Publication: 24/03/2021

विजय श्री
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे जटिल चुनौतियों में से एक है। इसके प्रभाव से कोई देश अछूता नहीं है, न इस समस्या से कोई एक देश अकेले निपट सकता है। पर्यावरण का विकास आपदा और निर्धनता से निकट का सम्बन्ध है। सतत और समावेशी विकास में इसकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में पर्यावरणीय मुद्दों से सम्बन्धित प्रश्न समय–समय पर उठते रहे हैं, प्रस्तुत आलेख में इनकी चर्चा की गई है।

Environment and climate change is one of the most complex challenges of the 21st century. No country is untouched by its impact, nor can any one country deal with this problem alone. Environmental development is closely related to disaster and poverty. Its role is very important in sustainable and inclusive development. Questions related to environmental issues in India have been raised from time to time, they have been discussed in the present article.

मुख्य शब्द : पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग।
Environment, Climate Change, Global Warming.

प्रस्तावना

उत्तराखंड के ऊँचे पर्वतों पर नंदादेवी चोटी की ढलान पर झूलते ग्लेशियर का एक हिस्सा खिसका तो 7 फरवरी की अचानक आयी विनाशकारी बाढ़ ने हिमालय के नाजुक पर्यावरण संतुलन से छेड़छाड़ के प्रति खतरे की घंटी बजा दी। राज्य के चमोली जिले में जोशीमठ के ऊपर रैणी गांव के पास ग्लेशियर के अचानक टूटने से अलकनंदा नदी की सहायक नदियों धौलीगंगा और ऋषिगंगा में भारी बाढ़ के साथ गाद, मिट्टी, चट्टान नीचे की ओर बहे तो प्रमुख पनबिजली परियोजनाओं सहित रास्ते में पड़ने वाले इलाकों में भारी तबाही हो गयी।[1] इससे जून 2013 में केदारनाथ तीर्थ के पास बादल फटने से आयी बाढ़ के बाद राज्य में हुए जल प्रलय की यादें ताजा हो गयीं। बाढ़ ने एन.टी.पी.सी. की तपोवन विष्णुगाड स्थित 520 मेगावाट की पनबिजली परियोजना ध्वस्त हो गयी और निर्माणाधीन ऋषिगंगा छोटी विद्युत परियोजना, सड़कों, पुलों के साथ–साथ घरों का तो नामोनिशान मिट गया।[2]

हालांकि इस घटना से किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगा लेकिन कुछ विशेषज्ञ ग्लोबल वार्मिंग और उत्तराखंड की पारिस्थितिकी में निरंतर गिरावट को त्रासदी की वजह बता रहे हैं। इस घटना ने नंदादेवी, बद्रीनाथ और केदारनाथ समेत राज्य के ऊपरी क्षेत्रों में अनियंत्रित विकास कार्यों को सुर्खियों में ला दिया है। इन क्षेत्रों में बनावट ऐसी है कि चाहे वह निर्माण गतिविधि हो या जलवायु परिवर्तन, यहां की सभी नदियों में अचानक बाढ़ आने की आशंका बनी रहती है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के अंतर सरकारी पैनल (प्च्ब्ब्) की रिपोर्ट सहित कई अध्ययनों में इन क्षेत्रों में बर्फ के तापमान प्रोफाइल के बढ़ने की बात कही गयी है। अब यह शून्य से 2 डिग्री सेल्सियस नीचे है, जबकि एक समय शून्य से 20 से लेकर 6 डिग्री सेल्सियस नीचे तक का तापमान हुआ करता था। इससे बर्फ के जल्द पिघलने की आशंका काफी बढ़ जाती है।[3]

इन घटनाओं से यह सबक लिया जा सकता है कि पर्यावरण, विकास, जलवायु परिवर्तन और आपदाओं के जोखिम से सम्बंधित मुद्दे पंचतत्व में असंतुलन के कारण उभर रहे हैं। अनियोजित मानवीय हस्तक्षेप इसका एक प्रमुख कारण है। पर्यावरण के प्रति खतरा अब काफी बढ़ गया है। पर्यावरण के प्रति बढ़ते खतरे से कमजोर और गरीब वर्गों की स्थिति और भी जटिल हो गयी है। इस परिस्थिति में पर्यावरण पर समग्र रूप से विचार करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण शब्द परिसंमतात् आवरण से निष्पादित हुआ है, जिसके मुताबिक सभी ओर से सृष्टि दो को घेरने वाला पर्यावरण है। चूंकि पृथ्वी, पानी, हवा, आग, आकाश, ध्वनि और वनस्पति आदि सभी तरफ से घेरे हुए है। इसलिए ये पर्यावरण के मूल तत्व हैं। इन्हीं की वजह से और इन्हीं के बीच हम और अन्य सभी प्राणी जीवित रह पाते हैं। ये तत्व प्रकृति में हमेशा से एक संतुलन अवस्था में रहते हैं और मनुष्य अपने जीवनयापन के लिए उन्हें छेड़ता भी रहा है तो उसी हद तक जितने से उसका संतुलन न बिगड़ पाये।[4]

प्रकृति में प्राकृतिक या मानवीय कारणों से पर्यावरण के किसी घटक को हानि पहुंचती है तो वह अपनी स्वनियमन व्यवस्था से उसे संतुलित करने का प्रयास करती है पर जब वह सहन सीमा से अधिक हो जाता है तो हमें प्रतिकूल परिणाम देखने को मिलते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान उद्योगों से रोजगार का सृजन हुआ एवं लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रस्थान करना प्रारंभ किया। इसके परिणामस्वरूप धीरे–धीरे उपभोक्तावाद में वृद्धि होने के कारण प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग निर्माण, उद्योग, परिवहन एवं अन्य उपभोगों के लिये किया जाने लगा और शहरों में बढ़ती जनसंख्या से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होने लगी। हालांकि शहरीकरण सामाजिक विकास एवं आर्थिक परिवर्तन का एक स्वाभाविक प्रतिफल है। इससे व्यक्ति और स्थान दोनों प्रभावित होते हैं। तीव्र गति से बढ़ते औद्योगिकरण तथा मानवीय क्रियाकलापों द्वारा भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी असंतुलन की स्थिति भयावह होती जा रही है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की समस्या के अतिरिक्त आज वैश्विक तपन और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्यायें सम्पूर्ण विश्व के लिए चिंता का विषय बन गयी है।[5]

सम्बन्धित किसी भी समस्या के निवारण के लिए यह आवश्यक है कि सम्बन्धित मुद्दों का पता लगाया जाये। भारत में 5 मुख्य पर्यावरणीय मुद्दें हैं –

जलवायु परिवर्तन

जर्मनवॉच द्वारा क्लाईमेट रिस्क इंडेक्स 2021 की रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया का 7वां सबसे जलवायु प्रभावित देश है। 2019 में जलवायु से जुड़ी आपदाओं के चलते भारत में 2,267 लोगों की जान चली गई थी तथा साथ ही करीब 501659 करोड़ रूपये का आर्थिक नुकसान हुआ था। 2019 में आयी आपदाओं की बात करें तो भारत में मानसून का मौसम कुछ ज्यादा ही लंबा था जिसका असर सामान्य से एक महीना ज्यादा देखने को मिला था। जून से सितंबर के अंत तक औसत से 110 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई जो 1994 के बाद सबसे ज्यादा थी। इसके चलते 14 से भी ज्यादा राज्यों में बाढ़ से 1800 से भी ज्यादा लोगों की मौत हुई। जबकि 18 लाख से भी ज्यादा लोगों को इसके चलते अपना घर–बार छोड़ना पड़ा। इस इंडेक्स के अनुसार अफ्रीकी देश मोजांबिक पहले स्थान पर है। दूसरे स्थान पर जिम्बाब्वे फिर क्रमशः बहामास, जापान, मलावी, अफगानिस्तान और भारत हैं। रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा दंश विकासशील देशों को झेलना पड़ा था, जिसका सबसे बड़ा कारण आपदाओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील तथा आपदाओं को झेलने में कम क्षमतावान होना माना गया है। हाल ही में नासा ने 2020 को 'दुनिया का सबसे गर्म वर्ष' के रूप में मान्यता दी है। यूएन द्वारा प्रकाशित 'एमिशन गैप रिपोर्ट 2020' से पता चला है कि यदि ऐसे ही तापमान में वृद्धि जारी रही तो सदी के अंत तक यह वृद्धि 3.2 डिगी सेल्सियस के पार चली जायेगी। इसी कारण बाढ़, सूखा, तूफान, हीटवेव, शीतलहर जैसी घटनायें भी आम हो जायेंगी।[6]

IPCC (इंटर गवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज) द्वारा 2019 की रिपोर्ट में हिमालयी क्षेत्र के बारे में पूर्वानुमान लगाया था कि ग्लेशियर आगामी वर्षों में हट जायेंगे जिससे भूस्खलन और बाढ़ आयेगी। उत्तराखंड के चमोली में ग्लेशियर टूटने से हुई तबाही को इससे जोडकर देखा जा रहा है। 2013 में केदारनाथ आपदा के बाद एक बार इस तबाही ने भारत को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है।[7]

प्रदूषण

IQAIR (ग्लोबल एयर क्वॉलिटी इन्फोर्मेशन कंपनी) की रिपोर्ट, 2019 के अनुसार विश्व में सूक्ष्म प्रदूषण के उच्चतम स्तर का सामना कर रहे 200 शहरों में से 90 प्रतिशत शहर चीन और भारत के हैं। बाकी शहर पाकिस्तान तथा इंडोनेशिया में हैं। शीर्ष 10 सबसे प्रदूषित देशों में सभी देश एशियाई हैं। इसमें भारत का स्थान 5 वां है। विश्व के अधिकांश देश वायु प्रदूषण की समस्या का सामना कर रहे हैं। W.H.O. 2018 रिपोर्ट ने समय पूर्व हुई 70 लाख लोगों की मौत में से अधिकतम की वजह वायु प्रदूषण बताया है तथा 15 साल से कम उम्र के लगभग 6 लाख बच्चों की मौत का कारण भी यही है।[8] यह चिंतनीय है कि बच्चों पर भी प्रदूषण का असर आ रहा है।

देश की नदियों में प्रदूषण से व्यथित सुप्रीम कोर्ट ने सुधारने का बीड़ा उठाया। यमुना में अमोनिया के खतरनाक स्तर तक बढ़ने (दिल्ली बोर्ड की याचिका) पर सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए सभी नदियों के प्रदूषण दूर करने का निर्णय लिया। पीठ ने कहा कि मसला बेहद महत्वपूर्ण इसलिए होता है कि इसका असर न केवल आम जनता पर पड़ता है बल्कि उन सभी जीव जन्तुओं पर भी पड़ता है जो भूजल पर आश्रित हैं तथा स्वच्छ पर्यावरण और प्रदूषण मुक्त पानी का अधिकार जीवन जीने के अधिकार के तहत संरक्षित हैं।[9]

जैविक विविधता का क्षरण

जीव भिन्नता पृथ्वी पर सबसे बड़ी भिन्नता है। मनुष्य के लिए जीव भिन्नता महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम इसके द्वारा निर्मित अन्य वनस्पति एवं पशुओं की प्रजातियों पर निर्भर हैं साथ ही यह इसकी प्रजातियों तथा पारिस्थितिकी तंत्रों के द्वारा वैश्विक, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तरों पर अनेक प्रकार की पर्यावरणीय सेवायें भी प्रदान करती हैं। जैसे – ऑक्सीजन का निर्माण, कार्बन डाईऑक्साईड की मात्रा कम करना, जलचक्र का नियमन तथा मृदा संरक्षण। औद्योगिकरण के फलस्वरूप कार्बन

डाइऑक्साइड तथा अन्य गैसों के बढ़ते स्तर के साथ–साथ वनभूमि के ह्रास ने ग्रीन हाउस प्रभाव को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। यह स्पष्ट है कि मानव जाति के कल्याण के लिए जैविक संसाधनों का संरक्षण अनिवार्य है। जीवों की भिन्नता मानव विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण दिवस पर साल 2020 के लिए जैव विविधता को चुना है। संयुक्त राष्ट्र ने हाल ही की घटनाओं जैसे ब्राजील, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में लगी जंगल की आग वैश्विक महामारी, पूर्वी अफ्रीका से लेकर एशिया में भारत तक टिड्डी हमला आदि से माना कि इससे जाहिर होता है कि मानव की पृथ्वी पर बसे अन्य जीवन पर निर्भरता है। हाल ही में इंटरगवर्नमेंटल साइंस पॉलिसी प्लेटफार्म ऑन बायोडायवर्सिटी एवं इकोसिस्टम सर्विसेज (IPBES) की 2019 की रिपोर्ट में पाया कि हाल ही के दशकों में सभी पशु और पौधों की प्रजातियों की 25 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं या होने वाली हैं।[10]

ओजोन परत क्षरण

भूतल से लगभग 50 किलोमीटर की ऊँचाई पर वायुमंडल, ऑक्सीजन, हीलियम, ओजोन और हाइड्रोजन गैसों की परतें होती हैं। जिनमें ओजोन परत धरती पर एक सुरक्षा कवच का काम करती है, क्योंकि यह ओजोन परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से धरती पर मानव जीवन की रक्षा करती है। सूरज से आने वाली ये पराबैंगनी किरणें मानव शरीर की कोशिकाओं की सहनशक्ति से बाहर होती हैं। अध्ययनों से यह पाया गया है कि वायुमंडल में ओजोन की मात्रा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। ओजोन परत के क्षय की जानकारी 1960 में हुई। वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि अंटार्कटिका महाद्वीप के ऊपर ओजोन परत में छेद हो गया है जो प्रतिवर्ष बढ़ रहा है तथा वायुमंडल में प्रतिवर्ष 0.5 ओजोन की मात्रा कम हो रही है। बढ़ते समय के साथ–साथ अब उत्तरी ध्रुव पर भी इसी प्रकार के छिद्र दिखाई देने लगे हैं। ओजोन परत का यह क्षय मानवीय क्रियाकलापों की अज्ञानता के चलते ऐसी गैसों की मात्रा बढ़ा दी गयी जो ओजोन परत को नष्ट कर रही हैं। ओजोन परत की क्षय से अनेक दुष्परिणाम जैसे पराबैंगनी किरणों के प्रभाव से पेड़ पौधे तथा जीव जंतु के लिए हानिकारक होना, मानव शरीर पर कैंसर, श्वसन रोग, अल्सर, मोतियाबिंद आदि घातक बीमारियां होती हैं।[11]

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) की रिपोर्ट के अनुसार साल 2015 में भारत की प्लास्टिक की मांग 2 मिलियन टन से 380 मिलियन टन हो गयी है। प्लास्टिक हल्का, टिकाऊ होने के कारण आम लोगों में पसंद किया जाता है। परन्तु इसके साथ यह एक अविघटित पदार्थ होने के कारण इसका प्राकृतिक क्षरण नहीं होता। विशेषज्ञों का मानना है कि 500 सालों तक प्लास्टिक विघटित नहीं हो पाता है। सिंगल यूज प्लास्टिक जैसे कैरीबैग, कप, पानी व कोल्डड्रिंक की बोतलें, स्ट्रॉ, फूड पैकेजिंग आदि सबसे ज्यादा खतरनाक होते हैं। प्लास्टिक इस्तेमाल के बाद जब यूं ही सड़कों पर फेंक दिया जाता है तब वह बारिश के पानी या अन्य कारणों से बहकर समुद्र, नदी, नालों में चला जाता है, चूंकि प्लास्टिक जल्दी गलता नहीं है और सैकड़ों सालों तक न गलने के कारण प्लास्टिक के कैमिकल इंसानों और जंगली जीव जन्तुओं तक पहुंच जाते हैं जिससे आगे जाकर उनकी मोत हो जाती है। जमीन पर प्लास्टिक जलाने पर जहरीली गैसों से प्रदूषण और बंजर जमीन का खतरा भी बढ़ जाता है।[12]

इन सभी मुख्य पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार करने के साथ–साथ हमें इनके पीछे उत्तरदायी कारणों पर भी ध्यान देना होगा कि ऐसे मुख्य कारण क्या हैं कि हमें इन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है।

निष्कर्ष

सबसे महत्वपूर्ण कारक मनुष्य की स्वयं की अज्ञानता या जागरूकता की कमी को देखा जा सकता है, क्योंकि यदि व्यक्ति अपना प्रकृति प्रेम जो हमारी प्राचीन संस्कृति में दिखायी देता है, यदि उसे यूं विस्मृत नहीं करता तो शायद ये तबाही के मंजर दिखायी नहीं देते। इसके साथ–साथ अन्य कारक बढ़ती विकास की प्रतिस्पर्द्धा, उपभोक्तावादी संस्कृति में बढ़ावा, विभिन्न विभागों में परस्पर तालमेल का अभाव, प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता व दबाव आदि उत्तरदायी कारकों में शामिल हैं। हमें गांधी के उस कथन को नहीं भूलना चाहिए जिसमें कहा गया है कि पृथ्वी, सभी व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है किन्तु उनके लालच की पूर्ति के लिए नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *https://www.magzter.com/stories/News/India-Today-Hindi/1613395139*
2. *अनिलेश एस. महाजन 'आसन्न खतरे की आहट', इंडिया टुडे, 24 फरवरी, 2021*
3. *https://www.aajtak.in/india-today-hindi/cover-story/story/a-rudewake-up-call-chamoli-himalayaenvironmental-challenge-india-today-coverstory-1208270-2021-02-18*
4. *सरोज कुमार वर्मा, 'पर्यावरण संकट : भौतिकवाद और आध्यात्मवाद का द्वंद्व योजना मई 2012*
5. *दिनेश मणि, पर्यावरण संरक्षण हमारी प्राथमिक आवश्यकता है, योजना मई, 2012*
6. *www.downearth.org.in*
7. *http/www.india.com/hindinews/india-hindi-himalya-glaciers-melting-rapidly-24-million-population-at-high-risk-scientist-warn-onclimate-change-uttarakhand-4408760-09feb2021*
8. *http/www.jagranjosh.com/current-affairs/india-5th-mostpolutedcountry -intheworld-report-inhindi-1582691557-2-feb26,2020*
9. *https://www.amarujala.com/india-news/supreme-court-pledges-toimprove-polluted-rivers-notice-to-fivestates*
10. *https/hindinews18.com/amp/news/nation/what-is-biodiversity-which-is- chosen-untheme-onworld-environment-day-viks-3141844.html*
11. *https://www.patrika.com/lucknow-news/world-ozone-day-2016-how-to-control-ozone-layer-depletion-1400125/*
12. *http/navbharattimes.indiatimes.com/other/sunday-nbt/just-life/bestways-to-manage-waste/amp-articlesnow /71479861.*